78वें स्वतंत्रता दिवस पर राज भवन, असम द्वारा आई.आर.सी.एस के सहयोग से आयोजित रक्तदान शिविर कार्यक्रम के अवसर पर माननीय राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य जी के संबोधन का प्रारूप

दिनांक : 15 अगस्त 2024, गुरुवार	समय : 12:00 PM	स्थान : चांदमारी, गुवाहाटी

- इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी, असम राज्य शाखा के चेयरमैन **श्री ए.के. अबसर हजारिका** जी,
- उपस्थित अन्य अतिथिगण
- संगठन के सम्मानित अधिकारी एवं कर्मचारी गण,
- रक्तदान शिविर में भाग ले रहे दानदाताओं,
- जे.आर.सी, वालेंटियर एवं ए.एन.एम विद्यार्थियों,
- मीडिया के हमारे मित्रों,

नमस्कार!

आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस महत्वपूर्ण अवसर पर आप सभी के बीच उपस्थित होना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। मुझे बहुत खुशी है कि राजभवन, असम ने इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी की असम राज्य शाखा के सहयोग से इस रक्तदान शिविर का आयोजन किया है। वास्तव में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में रक्तदान के लिए लोगों को प्रेरित करने का प्रयास प्रशंसनीय है। मैं शिविर में

रक्तदान करने वाले लोगों को हृदय की गहराई से धन्यवाद देता हूं।

मैं भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी की असम राज्य शाखा के प्रयासों तथा लोगों के अच्छे स्वास्थ्य एवं कल्याण की दिशा में इसकी भूमिका की सराहना करता हूं। रेड क्रॉस सोसाइटी मानव सेवा और कल्याण के लिए निःस्वार्थ और समर्पण भावना के साथ काम कर रहा है। मुझे विश्वास है कि यह प्रतिष्ठित संस्था आने वाले दिनों में भी अपना अच्छा काम जारी रखेगा।

मित्रों,

आज हम यहां इस शुभ अवसर पर एक नेक कार्य के लिए एकत्र हुए हैं। आज हम अपने महान राष्ट्र का 78वां स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं। यह दिवस हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के सर्वोच्च बलिदान को याद करने का अवसर होता है, जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहूति तक दे डाली। इसलिए, इस अवसर पर, मैं हमारे सभी ज्ञात-अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

मित्रों,

हम उस महान राष्ट्र के नागरिक हैं, जिसकी शैक्षणिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और अकादमिक समृद्धि दुनिया को प्रभावित करती है। भारत की समृद्धि और गणित, दर्शन और खगोल विज्ञान में इसकी वृद्धि ने दुनिया भर के

दार्शनिकों को भारत में ज्ञान की खोज में आने के लिए प्रेरित किया। हालाँकि, दशकों के विदेशी शासन का भारत पर व्यापक प्रभाव पड़ा, जिसने विभिन्न क्षेत्रों में हमारी प्रगति को प्रभावित किया। इसलिए विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता होने के बावजूद भी हम अपनी प्रगति को बरकरार नहीं रख सके।

लेकिन अब माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के दूरदर्शी नेतृत्व में देश में सकारात्मक बदलाव आया है। हम अब अपनी खोई हुई जीवंतता को फिर से तलाशने में जुट गए हैं ताकि हमारा भारत एक बार फिर "विश्व गुरु" बन सके।

हम अपनी आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आजादी का अमृत महोत्सव पहले ही मना चुके हैं। अब, हम अपने अमृत काल में हैं। इस शुभ अवधि में हमने "विकसित भारत" बनाने का बीड़ा उठाया है ताकि 2047 तक, जब हम अपनी आजादी के सौ साल पूरा करेंगे, तब हम अपने देश को अमृतमय बना सकें।

मित्रों,

समय की मांग है कि हम अपने हृदय में स्वतंत्रता की भावना को विकसित करें। हमें अज्ञान, अंधविश्वास, अशिक्षा, विदेशी संस्कृति के प्रभाव और अन्य सामाजिक कुरीतियों से स्वतंत्र होने की आवश्यकता है।

इसलिए हमें अपना स्वतंत्रता दिवस एक आयोजन के रूप में नहीं मनाना चाहिए, बल्कि इसे हमारी जीवनशैली में शामिल करना चाहिए। इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर “हर घर तिरंगा” की मुहिम चलाई गई है। इसने हमें अपने-अपने घरों में राष्ट्रीय ध्वज फहराने और अपने देश पर गर्व करने का अवसर प्रदान किया है। इसने हमें विविधताओं के बीच एकता के बंधन को मजबूत करने के लिए अपनी युवा पीढ़ी को हमारे तिरंगे की शक्ति का एहसास कराने का अवसर भी दिया है।

मित्रों,

हम इस महान राष्ट्र के नागरिक हैं, इसलिए हमें अपना स्वतंत्रता दिवस इस प्रकार मनाने की आवश्यकता है कि यह महान कार्यों का अवसर बन जाए। इस दिन मां भारती के गुणगान के साथ-साथ हमें कुछ ऐसा करने का संकल्प लेना चाहिए, जो समाज और समग्र मानवता के लिए अच्छा हो।

आज स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हम इस रक्तदान शिविर के लिए यहां एकत्रित हुए हैं और मैं सभी दानदाताओं को उनकी उदारता के लिए हृदय से धन्यवाद देता हूं। मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि आपकी यह परोपकार की भावना राष्ट्र के प्रति आपके प्रेम को प्रदर्शित कर रही है।

हम सभी जानते हैं कि रक्तदान करके हम किसी की जान बचा सकते हैं। इसलिए आपके रक्तदान में मानवता को बचाने की शक्ति है, जो बदले में राष्ट्र को समृद्ध बनाने में मदद करेगी। रक्तदान के कार्य के साथ-साथ समाज में रक्तदान के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

मित्रों,

हम भाग्यशाली हैं कि हमने ऐसे देश में जन्म लिया है जिसका सार त्याग की इमारत पर टिका है। इस देश का इतिहास त्याग और दान की अनगिनत कहानियों से भरा पड़ा है। भगवान श्री राम का जीवन त्याग का प्रतीक है। महर्षि दधीचि ने इंद्र के अनुरोध पर अपने शरीर की हड्डियों का दान कर दिया था, जिससे वज्र की उत्पत्ति हुई। एकलव्य ने अपने गुरु के आदेश पर अपना अंगूठा दान कर दिया। कर्ण ने अपने प्राकृतिक कवच और धारण भगवान इंद्र को दान कर दिए। मानवता की भलाई के लिए सिद्धार्थ ने अपना सिंहासन त्याग दिया और गौतम बुद्ध बन गये। गुरु गोबिंद सिंह ने देश और धर्म की रक्षा के लिए अपने पूरे परिवार का बलिदान दे दिया। हाल के इतिहास की बात करें तो महात्मा गांधी, विनोबा भावे और कई अन्य लोगों ने अपना पूरा जीवन मानवता की सेवा में समर्पित कर दिया। इसलिए, जब हम एक ही मातृभूमि के हैं, तो हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम अपने साथी भारतीयों की मदद के लिए हाथ बढ़ाएं।

इसलिए, रक्तदान करने की आपकी सहमति वास्तव में हमारी संस्कृति को प्रतिध्वनित करती है अर्थात दान से हमें आनंद मिलता है। आज इस महान अवसर पर आपकी उदारता ने वास्तव में मिसाल कायम की है। साथ मिलकर, हम बदलाव ला सकते हैं - आइए एकजुट हों और अपने राष्ट्र को वास्तव में राष्ट्रों के समूह के बीच खड़ा करने के लिए मिलकर काम करें। यह हमारे लिए एक उपयुक्त क्षण है। दुनिया के किसी भी अन्य देश की तुलना में हमारे यहां युवाओं की संख्या सबसे ज्यादा है। ऐसे में देश को हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की जिम्मेदारी हम पर आती है।

मैं यह कहकर अपना भाषण समाप्त करना चाहूंगा कि रक्तदान बहुत नेक काम है और अगर आप दूसरों की जान बचा सकते हैं तो आप की जिंदगी किसी डॉक्टर से कम नहीं है। हम सभी डॉक्टर तो नहीं बन सकते, लेकिन हम सभी रक्तदान कर किसी का बहुमूल्य जीवन बचा सकते हैं।

आप सभी को धन्यवाद,

जय हिन्द!